राजस्थान में पारिस्थितिकी पर्यटन का आधार :– पर्यावरण

कमलेश बैरवा
शोधार्थी, अर्थषास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

"मनुष्य अपने वातावरण की उपज है" यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि मानव जीवन वातावरण से प्रभावित होता है वातावरण से तात्पर्य मानव जीवन के चारो और फैली हुई भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों से है। जिनमें रहकर मनुष्य अपना जीवनयापन करता है ये प्राकृतिक एवं मानव निर्मित परिस्थितियाँ मानव जीवन को पूरी तरह प्रभावित करती है। जिनमं से एक पर्यावरण है जो मानव जीवन को प्रभावित करने वाली प्रत्येक पारिस्थितिकी का जन्मदाता है। मनुष्य का जीवन सुचारू रूप से चले इसके लिए उसका पर्यावरण के साथ सामंजस्य होना अति आवश्यक है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

कमलेश बैरवा,
''राजस्थान में पारिस्थितिकी पर्यटन का आधार :– पर्यावरण'',
शोध मंथन जून 2017,
पेज सं0 64–68
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.11 (SM 418)

प्रस्तावना

पर्यावरण का अर्थः–

सामान्यतयाः जब हम पर्यावरण शब्द सुनते है तो सबसे पहले हमारे मानस में कीट–पतंगे, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे और जंगल की छवि बनती है। परन्तु पर्यावरण का आशय बहुत विस्तृत है। हमारे आप–पास चारों और पाई जाने वाली हर चीज हमारा पर्यावरण बनाती है पीने का पानी, हवा, मिट्टी भी हमारे पर्यावरण हैतो हमारो द्वारा फैलाई गई जैविक और रासायनिक गन्दगी और धुँआ भी हमारे पर्यावरण का हिस्सा है इस सम्बन्ध में मैकाइवर का तर्क है कि "मानव आवास पृथ्वी और उस व्याप्त समस्त प्राकृतिक दशाएँ जो पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करती है" वह पर्यावरण का हिस्सा है।

इस प्रकार पर्यावरण से तात्पर्य उन सभी भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों से है जिसमें रहकर मनुष्य पल–पोसकर बड़ा होता है तथा अपने मानव जीवन को आगे बढ़ाता है ये परिस्थितियाँ प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकती है।

परिभाषा :–

1. फिटिंग (1922) ने सर्वप्रथम पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा कि जीव के समस्त पारिस्थितिक कारकों का पूर्ण योग ही पर्यावरण है।
2. क्लार्क (1980) के अनुसार मानव को एक निश्चित अवधि और स्थान विषेश पर आवृत करने वाली दशाओं के योग को पर्यावरण कहा जा सकता है।
3. रॉबिन्स "पर्यावरण उन संस्थाओं अथवा शक्तियों से बना होता है जो किसी संगठन के कार्य निष्पादन को प्रभावित करती है किन्तु उस संगठन का उन पर बहुत कम नियन्त्रण होता है।"
4. वैबस्टर शब्द कोष के अनुसार– "पर्यावरण से आशय उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है जो सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति या समुदाय के जीवन को प्रभावित करती है।"

इस प्रकार पर्यावरण उन निकटवर्ती दशाओं से मिलकर बना है जो व्यक्ति अथवा समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करती है ये दशाएँ प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकती है।

पर्यावरण का वर्गीकरण :–

पर्यावरण को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(1.) प्राकृतिक अथवा भौगोलिक पर्यावरण :– प्रकृति प्रदत्त सभी परिस्थितियों व दशाओं के सम्मिलित योग से बना पर्यावरण प्राकृतिक अथवा भौगोलिक पर्यावरण कहलाता है। जिसमें देश की भौगोलिक स्थिति धरातल की बनावट, प्राकृतिक स्रोत, जैसे–वनस्पति, जल, खनिज, सम्पदा, पशुधन शक्ति के साधन, जलवायु आदि को शामिल किया जाता है जिनका मानव जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

(2.) कृत्रिम अथवा सामाजिक पर्यावरणः– मानव निर्मित वे परिस्थितियाँ जो मानव जीवन को सुखी, समृद्ध, शान्त, स्थायी व व्यवस्थित बनाती है तथा मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है इन परिस्थितियों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1.) आर्थिक परिस्थितियाँ :– इनके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था की स्थिति, आर्थिक नियम, आर्थिक मान्यताएँ, आर्थिक विकास भी अवस्थाएँ आदि सम्मिलित है।

(2.) गैर आर्थिक परिस्थितियाँ :– इसके अन्तर्गत सामाजिक नियम एवं रीति–रिवाज, जनसंख्या, राजनैतिक स्थितियाँ, शिक्षा, तकनीकी विकास, वैधानिक नियम, संस्कृति पारिस्थितिकीय दशाएँ आदि को शामिल किया जाता है।

पर्यावरण की संरचना :– मानव जीवन को प्रभावित करने वाले कारकों के आधार पर पर्यावरण को मुख्य रूप से चार परिमण्डलों में बाँटा जा सकता है।

(1.) स्थलमण्डल :–

पृथ्वी की बाहरी परत को स्थलमण्डल कहा जाता है, इसके अन्तर्गत सभी महाद्वीप और महासागरीय नितल सम्मिलित किए जाते है। खनिजों से बनी तीन सौ किलोमीटर मोटी इस परत को भू–पर्पटी कहा जाता है। भू–पर्पटी के महाद्वीपीय भाग की शैलों में सिलिका और एल्यूमिनियम तत्त्वों की प्रधानता के कारण इसे सिआल परत भी कहा जाता है। दूसरी तरफ महासागरीय नितलीय भू–पर्पटी में सिलिका और मैग्नीषियम तत्त्वों की प्रधानता के कारण इसे "सीमा" परत कहा जाता है। स्थल मण्डल के ढ़ाल और ऊँचाई में अन्तर के कारण पृथ्वी पर विभिन्न स्वरूप जैसे पर्वत, पठार, मैदान आदि का निर्माण हुआ है।

(2.) जलमण्डल :–

भू–मण्डल के लगभग तीन चौथाई भाग पर फैली सम्पूर्ण जलराशि मिलकर जलमण्डल का निर्माण करती है। जिसमें महासागर, सागर, झील, नदी, हिमनदों ओर हिमचादरों को शामिल किया जाता है। पृथ्वी पर जल के बिना जीवन असम्भव है। यह मानव जीवन के अस्तित्त्व की एक अनिवार्य जरूरत है विश्व के लगभग तीन चौथाई क्षेत्र में फैली छोटी अथवा बड़ी जल राशिया, वायुमण्डलीय ताप, वायुदाब और पवन प्रणालियों से प्रभावित होती है और उन पर अपना प्रभाव डालती है।

(3.) वायुमण्डल :–

पृथ्वी के चारों और फैला वह गैसीय आवरण जो स्थलमण्डल और जलमण्डल को चारों और से घेरे हुआ है। वायुमण्डल कहलाता है। वायुमण्डल में व्याप्त प्रमुख गैसों में नाइट्रोजन (79 प्रतिशत), ऑक्सीजन (20 प्रतिशत), कार्बनडाईऑक्साइड (0.03 प्रतिशत) और बहुत कम मात्रा में आर्गन, क्रिप्टान, जेनान, नियॉन, हिलियम आदि गैसों क अतिरिक्त जलवाष्प, अमोनियम ऑजोन सूक्ष्म जैव पदार्थ कुछ लवण और हवा में तैरते ठोस कण भी पाए जाते है।

(4) जैवमण्डल :–

स्थल, जल और वायुमण्डल के वे सभी भाग जहाँ प्राणवान जीव रहकर अपना विकास

कर सके उसे जीवमण्डल कहा जाता है अन्य मण्डलों की तुलना में यह एक झीनी सी परत है किन्तु यह परत स्थल, जल और वायुमण्डल से अधिक महत्त्वपूर्ण है जैवमण्डल का विस्तार सागरीय तल में 11 किलोमीटर गहराई से लेकर वायुमण्डल में 17 किलोमीटर ऊँचाई तक है। वायुमण्डल के उपरोक्त चारों घटक मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते है। पर्यावरण के इन चारों घटकों की पारस्परिक निर्भरता और अर्न्तसम्बन्धों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण की संकल्पना एक जैविक–भौतिक संकल्पना है जिसमें जैविक और अजैविक (भौतिक) संघटकों का महत्त्व केन्द्रीय है।

पर्यावरण और पर्यटन :–

पर्यावरण और पर्यटन परस्पर एक दूसरे पर आश्रित है पर्यटन पर पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है स्वच्छ पर्यावरण पर्यटन को बढ़ाया देता है तथा प्रदूषित पर्यावरण पर्यटन को हतोत्साहित करता है।

राजस्थान में पारिस्थितिकी पर्यटन और पर्यावरण :–

भारतीय मरूस्थल राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब इन चारों राज्यों तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल तीन लाख सत्रह हजार वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्रफल का 61 प्रतिशत भाग राजस्थान प्रदेश में अवस्थित है जिसमें प्रदेश की कुल जनसंख्या का 40 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यद्यपि मरूस्थल पर्यावरण पेड़–पौधे, जीव–जन्तुओं, वन्य जीवों तथा मनुष्यों की आबादी तथा जीवन के लिए सदैव अनुकूल नहीं होता फिर भी थार मरूस्थल संसार की सबसे घनी आबादी वाला प्रदेश है। जहाँ की आबादी का घनत्त्व 84 प्रतिवर्ग किलोमीटर है। राजस्थान समृद्ध क्षेत्र है जिसका पर्यावरण से गहन सम्बन्ध है पर्यटन व पर्यावरण एक दूसरे पर आश्रित है राजस्थान की पर्यावरण अनुकूलता पर्यटकों का मन मोह लेती है। इसलिए भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आवष्यक रूप से आना चाहता है। इसकी खास वजह यहाँ के मनमोहक पर्यटन स्थलों के साथ अपनापन है। पर्यटन की जितनी विविधता राजस्थान में है उतनी भारत के किसी दूसरे प्रदेश में नहीं है। राजस्थान की नदियाँ, झीलें, नहर आकर्शण के रूप में तब्दील होती जा रही है। पारिस्थतिकी पर्यटन की मिशाल राजस्थान की इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना विश्व के सम्पूर्ण मरूथलों में सबसे बड़ी और विशाल है जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र व पर्यावरण का मुख्य आधार है। इस नहर परियोजना के आस–पास का क्षेत्र पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करता है इस नहर परियोजना का पानी श्री गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर और बाड़मेर तक पहुँच चुका है।

जोधपुर से दक्षिण–पूर्व दिशा में साठ किलोमीटर की दूरी पर स्थिति सरदार समन्द झील का क्षेत्र भी पारिस्थतिकी पर्यटन की दृष्टि से ओझल नहीं है जो लूनी की सहायक सूकड़ी और गुहिया नामक नदियों के संगम पर बनी हुई है। सरदार समन्द झील एक ऐसी आद्रभूमि है जिसका क्षेत्रफल 2.8 वर्ग किलोमीटर है। किन्तु जो 35.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है जो गर्मी के मौसम में पर्यटकों के घूमन–फिरने व आखेटक का आनन्ददायक स्थान है यहाँ स्थानीय तथा दूर–दूर के प्रदेशों से आये हुए प्रवासी पक्षियों की 130 से भी अधिक प्रजातियाँ पाई जाती है।

जिनमें विशेष रूप से चमचा पक्षी, रंगीन सारस, सफेद, सारस, कुरंजे, कंघीनुमा बतखे, बेलचा तथा चितकबरी जंघिने देखने लायक है। इसके अलावा जवाई बाँध की आर्द्र भूमि भी परिस्थितिकी पर्यटन की अपार संभावना लिए हुए है, अरावली पर्वतमाला में अवस्थित यह भू–भाग भी मरूस्थल का निकटवर्ती क्षेत्र है। जिसकी संक्रमणशील स्थिति होने के कारण यह प्रदेश औसत दर्जे की वर्षा के मापदण्ड के साथ–साथ मरूस्थल के शुष्क क्षेत्र का भी इजहार करता है। यहाँ पाये जाने वाले सारस, कुरंजे, काली बतखें, शाही मछलियाँ, गुड़गुड़े पिददी चिड़ियाँ, चुपके और रंगीन बतखें पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। मगरा जल का यह प्राकृतिक प्रदेश अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियाँ, छोटी–बड़ी झाड़ियों और पेड़ो से परिपूर्ण है जंगली जानवरों में यहाँ तेंदुए, लकडबग्घे, सियार, खरगोश, नीलेसांड तथा लंगूर आदि को भी देखा जा सकता है।

पारिस्थतिकी पर्यटन की दृष्टि से बीकानेर जिले का जोड़–बीड़ क्षेत्र भी अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण आरक्षित वन क्षेत्र है जो की बीकानेर नापासर मार्ग पर बीकानेर से सोलह किलोमीटर दूर पड़ता है। 75 वर्ग किलोमीटर में फैला यह क्षेत्र अपने विषिश्ट प्रकार के रेगिस्ताान के कारण राजस्थान में पारिस्थितिकी पर्यटन का प्रमुख केन्द्र कहा जा सकता है यहाँ के प्राकृतिक परिवेश में छोटी–छोटी, झाड़ियाँ, मिट्टी कंकरीली जमीन तथा बालू के टीबे पाए जाते है इस क्षेत्र में चिंकारे रेगिस्तानी लोमड़ियाँ और बिल्लियाँ तथा नील गायें प्रचुर संख्या में पाई जाती है।

राजस्थान में पाई जाने वाली परिस्थितिकी पर्यटन की अपार संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार के साथ–साथ राज्य सरकार को पारिस्थितिकी पर्यटन का आनन्द उठाने के इच्छुक पर्यटकों को छोटे समूहों में इन स्थलों तक ले जाने के पैकेज ट्यूर विकसित करने के साथ ही उनमें पर्यावरण के प्रति अनुराग पैदा करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें प्रकृति की प्रशंसा के लिए प्रेरित किया जा सके।

संदर्भः–

1. पर्यावरण अध्ययन की रूपरेखा, मेघा तिथी जोश पृष्ठ संख्या–1.2,1.3.1.4 आर.बी.डी. पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली।

2. सांस्कृतिक पर्यटन, डॉ. राजेष कुमार व्यास, पृष्ठ संख्या 79,141,142 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयुपर।

3. भारत में आर्थिक पर्यावरण, डॉ. बी. पी. गुप्ता, डॉ. एच. आर. स्वामी पृष्ठ 1.1,1.2 आर.बी.डी. पब्लिकेशन्स नई दिल्ली